नवरेह (नववर्ष)
महिमा

लेखक :
पंडित मोतीलाल 'पुष्कर'

प्राप्तिस्थानः
भगवान गोपीनाथजी आश्रम
पंपोश एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००४८

सप्त ऋषि संवत: ५०७२ कलिसंवत् ५०९७

नव वर्ष या नवरेह

समग्र भारतीय हिन्दू समाज तथा विदेशस्थ हिन्दू प्रथम दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन वर्ष का प्रथम दिवस मनाते हैं। इस शुभ दिन को विभिन्न प्रातों में अलग-अलग नामों से स्मरण किया जाता है। महाराष्ट्र में वर्ष प्रतिपदा, तमिलनाडु में नवरात्र, आन्ध्र प्रदेश में उगाडी एवं गुडीपर्व। दोनों शब्द युगादि शब्द के ही बिगड़े रूप हैं। कश्मीर में इस उत्सव को **नवरेह** के प्रिय नाम से याद करते हैं। यह शब्द नववर्ष से बना है। इस नवरेह शब्द को लोग अज्ञान के कारण कई प्रकार के ऊंटपटांग अर्थ एवं व्युत्पत्तियां करते हैं। वास्तव में नववर्ष शब्द के 'र्ष' को रेह बनता है तथा नव का अन्तिम व और वर्ष का एक ही वकार का रूप धारण करते हैं तो यह शब्द **नवरेह** बनता है।

वैदिक काल गणना

इस महत्त्वूपर्ण दिन का संबंध सृष्टि की उन्पत्ति से है। हिन्दू काल गणना के अनुसार हमारी इस सृष्टि की आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष है। श्रीमत-भागवत-पुराण के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति एवं प्रलय के देवता ब्रह्मा को यह सृष्टि लय हो जाती है और पुन: इसका जन्म भी होता है। एक सृष्टि की लघु कालवधि को कल्प कहते हैं ब्रह्मा के एक दिन के बराबर एक कल्प तथा ३६० कल्पों को एक ब्रह्मा-वर्ष स्वीकार किया गया है। ऐसी ही ३६००० कल्पों का एक समय ब्रहनों का जीवनकाल है। एक कलप में १४ मन्वनतर हैं। आज कल सातवां मन्वन्तर चल रहा है। ब्रह्मा के संपूर्ण जीवनकाल का आज दूसरा जीवनार्ध चल रहा है। आज २८वां कलियुग जारी है। आज के कलप का नाम श्वेतवाराह कल्प है तथा वैवस्वत मन्वन्तर गतिमान है। आज के युग का अवतार बुद्ध भगवान् है। - १.

आर्य भट्ट एवं बेराहमिहर के ज्योतिष सिद्धान्तों के अनुसार चार अरब बतीस करोड़ सौर वर्षों का एक महायुग होता है प्रत्येक महायुग चार युगों का क्रम नियत है। यह सारी गणना ऋषियों ने आध्यात्मिक शक्ति के कारण सुनिशिचित की है तथा ऊपर उक्त

वैज्ञानिकों (१) मह एवं मिहिर ने इसी गणना को वैज्ञानिक आधार पर प्रस्तुत किया है। वेद अनन्त ज्ञानराशि है। इस राशि की किचिन्मात्र झलक इसे समझा सकते है:-

सप्त युंजन्ति रथं एक चक्रमे
एको अश्वो वहति सप्तनामा
त्रिनाभि चक्रं अजर अणर्वम
यत्रेमाः विश्वा भुवनानि तस्थो।।

यह मंत्र भगवान् भुवन भास्कर सूर्य देवता के बारे में है। सूर्यदेवता ही कालगणना का आधार है। इस मंत्र में कहा गया है कि सूर्यदेव के रथ को सात घोड़े खींचते हैं। यह रथ एक ही पहिये का है। सात अश्व वास्तव में गतिशील सूर्यकिरणों के प्रकाश के सात रंगों को कहा जाता है। इस रथ के तीन केन्द्र स्थान है। यह तीन (१) केन्द्रीय: (२) भुव: (३) स्व: है। यह रथ अजर एवं अमर है।

वेद में अन्य मंत्र भी इसी विषय पर दिये गये हैं। यह निम्न मंत्र देखने लायक हैं- **"सुषुम्णा सुर्यरश्मि: चन्द्रमा गन्धर्व:"** अर्थात् सुषुम्णा नामक सूर्यरश्मि को प्राप्त करके ही चन्द्रमा प्रकाशित होता है। इसी बात को विज्ञान इस प्रकार प्रकट करता है- The moon gets new light from the sun.

ऐसे सहस्त्रों वैज्ञानिक तथ्य वेद में भरे पड़े हैं। ऐसे ही वैदिक तथ्यों पर आधारित वैदिक गणित को आज यूरोपीय देशों में Vedic Mathematics के नाम से पढ़ाया जाता है विशेषकर इन्गलैंड में वेद का अनेक विज्ञान प्रेमियों ने अपने श्रद्धासुमन समर्पित किये हैं:- नेता जी सुभाष चन्द्र बोस इन शब्दों में अपनी श्रद्धा समर्पित करते है:- "वेदों की ओर लौट चलो" स्वामी दयानन्द जी के उक्त विचार का आधार इस संसार का सारा ज्ञान उंडेल दिया है। उसके आगे और विकास नहीं हो सकता। इस लिये हमारे हिन्दुस्थान ने चौतरफा जो प्रगति कर ली थी उससे आगे दुनिया न बढी है न बढ़ सकती है। - २.

इसी विषय पर अमेरिका के एक वैज्ञानिक का मत-

"Mr. William Bunyan, an eminent astronomer describes Hindu Astrology as the oldest science in the history of mankind, since in his view it's precepts and formulae were worked out over a period of thousands of years by men who employed orthodox but strictly modern scientific methods and who systematized the result of their research as few scientists of to-day are capable of doing." - ३.

इसी वैदिक ज्ञान के आधार पर सृष्टि का प्रथम दिवस नवरेह या नववर्ष का पर्व दिवस है। सूर्य एवं चंद्र काल निर्धारण के दो कारक हैं। सूर्यवर्ष वैशाखी से प्रारंभ होता है चन्द्रवर्ष नवरेह से शुरू हो जाता है। सूर्य के १२ राशियों में क्रमशः पदापर्ण से १२ महीने बनते हैं। घड़ी की बारह संख्या भी इसी बात की साक्षी है।भूमंडल इसी बात का द्योतक है। वर्ष के ३६० का जो वृत्त बनता है उसका आधार ९० डिग्री के चार स्वरूपों को भिन्न बनने वाला संपूर्ण वृत्त है। ५ जोड़कर यह सारे वर्ष का रूप बनता है। सूर्य की संख्या १२ है।

रात एवं दिन के २४ घंटे इसी बात के सूचक हैं। इसी सूर्य के क्रमण से उत्तरामण तथा दक्षिणायन बनते हैं। ऋतु परिवर्तन तथा षड् ऋतुओं का आगमन भी इसी कारण होता है। भारतीय काल गणना के अनुसार ही सूर्यगणित तथा चन्द्रगति को एक समरूप बनाने के लिये तेरहवें महीने की कल्पना वेदों ने रची है। **त्रयोदश मासा; इति श्रुतिः।**

चन्द्रगति के आधार पर सारे वैदिक पर्व या त्यौहार तय किये जाते है। धर्म और गणित का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। आज सप्त ऋषिसंवत् या कश्मीर संवत् ५०७२, कलियुगाब्द ५०९७ है। कलियुगाब्द B.C. ३१०१ से प्रारंभ होता है। ऋषिसंवत् तथा कलिसंवत से २५ वर्षों का अन्तर है। हमारा आज का नववर्ष विक्रमी संवत् २०५३ छः वैशाख का पड़ता है। इस दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार २० मार्च १९९६ बुधवार है।

कालगणना की बात चल रही है। इसी सिलसिले में यह बात लिखना भी उपयुक्त है कि भारतीय मनीषियों ने रात दिन के समय को ६० घटिकाओं में गिना है। एक घड़ी

२४ मिनट की होती है। इसी साठ और २४ को अंग्रेजों ने ६० मिनट और २४ घंटे के तौर पर बदलकर हमें पेश किया है। हमारा समय रात के बारह बजे के बाद प्रारंभ होता है। इसी को आधार बनाकर इन्गलैंड में भी समय स्थिर किया जाता है। वे अंग्रेज लोग इस १२ बजे रात्रि को अत्यधिक महत्व देते है। वहां शासन कार्य या सरल भाषा में राजकीय चार्ज लेनदेन १२ बजे रात्रि से पहले-पहले पूरा किया जाता है। कभी-कभी इस काम को अंजाम देने में देर लगने पर राजकीय घड़ी की दोनों सुइयों को रोककर १२ बजे रात्रि का संकल्प निभाया जाता है। यह समय उनके लिये शुभ घड़ी या शुभमुहर्त है। यहां तक कि यूरोपीय देशों में भी इस वर्ष प्रतिपदा के आस-पास ही ईसाई New Year's Day मनाया जाता था। इसी कारण September, October, November, December यानी सातवां महीना, आठवीं महीना, नौवां महीना तथा दसवां महीना इसी अर्थ में उक्त अंग्रेजी मासों के नाम आज भी प्रचलित हैं। अंबर Zodiac आकाशीय ग्रहचाल को कहते है। उनका यह क्रम कालान्तर में उसी प्रकार बदला जैसे बाइबल को नये ढंग से सजाकर New Testament नामक रूप दिया गया है। इससे स्पष्ट है कि जनवरी तथा फरवरी ग्यारहवे तथा बारहवें महीनों के नाम है और मार्च ही March of the Year गिना जाना अनूकूल है। नववर्ष से अभिप्राय है 'नवजीवन' क्या घातक हिममय जनवरी में बहार या वसन्त की नई हरियाली और पुष्प आगमन संभव है? पश्चिमी 'पंचांग' यानी कलैंडर को पोप ग्रेगोरी ने ५ अक्टूबर १५८२ में नया रूप देकर प्रारंभ किया था। संभवतः यह फेरबदल तब ही हुआ है। - ४.

नववर्ष मंत्र

नवरेह के दिन कश्मीरी पंडित घरों में जो मंत्र गाया जाता है वह इस प्रकार हैः-

श्रीमान् सुचारूवदनः शुभ गात्र यष्टी
रक्ताक्षिमृत् प्रियवचो युगदीर्घबाहः
देवै दिनेश्वर मुरवैरव लो कि तोण्डतौ।
भर्यात् चिरं शुभकरो नववत्सरो नः।।

अर्थात- यह नववर्ष शोभयमान् सुन्दर एवं सुदृढ- शरीरधारी उज्जवल नयनों से विभूषित मृदुभाषी सशक्त भुजाधारी सूर्य आदि देवगणों से अनुग्रहयुक्त हमारे लिये

शुभसंदेश लेकर पदापर्ण करो सूर्य ही सविता या सृष्टिकर्ता है। सृष्टिरचना तब ही संभव हुई जब करोड़ो वर्षों तक न रुकने वाली वर्षा आखिर थमी। गैसपूर्ण वातावरण ने जीवन-हितकारी रूप धारण किया। सूर्य की उदय और अस्त व्यवस्था एवं पृथ्वी के आकार धारण करने की घड़ी जब आई। इन दोनों के ही कारण तब पृथ्वी जल, तेज, वायु एवं आकाश की स्थिति कायिम हुई।

पहले केवलमात्र तीन ही तत्व अर्थात जल, वायु और आकाश थे। सूर्य और द्यरा के न होने से मानव सृष्टि क्रम जारी न हुआ था। करोड़ों वर्षो के पुन: गुजरने के बाद हरियाली या काई की उत्पति हुई। इसी हरियाली को हम नववर्ष के दिन जौ दाने बीज कर उस नवरचना के प्रथम क्षण की महिमा का स्मरण करते हैं। हिन्दुत्व की सनातनता तथा हिन्दुतत्वज्ञान की अखंडता की यही महिमा है। इस तत्वज्ञान में अनादि से अनन्त तक सारे क्रमों का बोध सुरक्षित है। इसी नवरचना के साथ दश अवतारों को जोड़ा जा सकता है। देखिये:- (१) मत्स्य: (२) कूर्मो (३) वराहश्च (४) नरसिंहा (५) वामन:। (६) रामो (७) रामश्च (८) कृष्णाश्च (९) बुद्ध:(१०) कल्कि स्तथैव च।।

अर्थात- (१) अमोबा (२) बृहत् जलचर (३) जलथलचर (४) अर्धमानव (५) लघुमानव (६) सामाजिक मानव (७) विद्रोहीमानव (८) अतिमानव (९) मुक्तमानव (१०) भावीमानव।

यह कहीं की ईंट कहीं का गारा नहीं प्रभु की अपार-कृपा से यही ज्ञान तथा अनुमूति सनातन की पहचान है। इस हरियाली को ही वैष्णवी शक्ति के नाम से जाना जा सकता है। इसका उपयोग अहिंसक जीवन जीने के लिये होता है। यही वैष्णवी शक्ति का सार है।

मातृ-महिमा:-

ऋषिगणों ने हमें सृष्टि की वास्तविकता का ज्ञान सदा प्रदान किया है:- माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:" अर्थात् यह पृथ्वी मेरी मां है। मैं इसका पुत्र हूँ। यही बात गुरूग्रन्थ साहिब में इस प्रकार गाई गई है:-

"माता तरत महत्"

यानी पृथ्वी माता ही धारण करने वाली महान् शक्ति है।

वेद गाता है:-

"ध्रुवा द्यौ: ध्रुवा पृथ्वी ध्रुवा: सा: पर्वता: इमो ध्रवं विश्वं इदं जगद् ध्रुवो राजा विशां असि।।" - वेद।

अर्थात् यह पृथ्वी शाश्वत् है ये पर्वत नित्य है, यह सारी सृष्टि नित्य है एवं यह शासन व्यवस्था नित्य है।

हम सारे इस धरती मां के ही अंश हैं, हमारी सता इसी से है। हमारा मास, लहू, हडियां इसी के बने हैं। जितने जीव, पशुपक्षी, फल-फूल, पेड़-पौधे हैं, सब इसी के नाना-रूप हैं। इस धरती मां की महिमा वेदों में इस प्रकार गाई गई है:-

"विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा

हिरण्यवक्षा जगता निवेशनी द्रविणं में ददातु।। - ५.

अर्थात्-समस्त जगत् का भरणपोषण करने वाली, सुवर्ण आदि धातुओं को अपनी कोरव में वहनैकरनेवाली, सारे चराचर को अपने ऊपर धारण करने वाली, संसार को स्थिरता प्रदान करने वाली, पृथ्वी हमें भरपूर संपदा प्रदान करे।

भूमि पूजन-

इस तथ्य की महिमा इस से भी आंकी जाती है कि जब कोई धार्मिक कृत्य प्रारंभ किया जाता है तो सबसे पहले भूमिपूजन किया जाता है। इस अवसर पर धरती मां की वन्दना इस मंत्र से की जाती है:- **"पृथ्वी, त्वया धृता लोका: देवि त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्"।।**

अर्थात्- हे पृथ्वी मां तुमने सारे लोकों को धारण किया है। हे मां, मुझे भी वहन करो। मुझे यहां टिकने की आज्ञा दो ताकि मैं यह शुभ-कर्म संपन्न-कर सकूँ। हमें

मनीषियों ने सावधान किया है कि प्रातः जागकर शय्या से उठकर धरती पर पैर टिकाते समय मां से याचना करें कि मेरे पादस्पर्श की धृष्टता या विवशता के लिये क्षमा हो। जगद्गुरू आदिशंकराचार्य ने 'सौन्दर्य लहरी' में गाया है-------

हे मां, तुम्हारे पावन चरण कमलों से प्राप्त रजकणों के सहारे की यह प्रथम रचनाकार या आद्य कुंभकार ब्रह्माजी प्रारंभ आज तक सब लोकों की रचना करता आया है ये भगवान् विष्णु तुम्हारी महिमा के सामने नतमस्तक हो विनम्र होकर अपने हजारों शीषों से जैसे-तैसे तुम्हें वहन कर रहा है, भगवान् शिव इन्हीं धूलिकणों को विभूति के रूप में तन-बदन पर मलकर भस्मांगधारी कहलाता है। यह धरती मां हमारा सारसर्वस्व है। - ६.

क्या अन्यग्रहों पर जीवन है?

विगत ४० वर्षों से वैज्ञानिक विभिन्न ग्रहों की यात्रा करके इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि जीवन केवल इस हमारी पृथ्वी पर ही उपलब्ध है। अपनी अन्तरिक्ष यात्रा तथा अन्य ग्रहों की यात्राओं के दौरान वे यात्रीगण जीवनोपयोगी सारी सामग्री यहां से लेकर ही वहां जाते हैं। जरा हम सोचे कि यह अनमोल मानवजीवन जिसके लिये सारे छोटे-बड़े साधनों एवं अविष्कारों को जन्म दिया गया है वह जीवन केवल इस हमारी ध ारती पर फल-फूल रहा है और कहीं नहीं।

श्री नवदुर्गा की आराधनाः-

इस पावन-पर्व पर महिमाशाली लोग श्री नव दुर्गा भगवती की आराधना करते हैं। जगदंबा के प्रमुख नामों मेंः-

प्रथम शैलपुत्रीति, द्वितीय ब्रह्मचारिनी तृतीय चन्द्रघंटेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम

आदि-आदि पावन स्वरूपों की पूजा-अर्चना होती है। नव की संख्या चरम है इस लिये श्रीनवदुर्गा की मनोहर स्तुतियां संस्कृत में तथा लोक-भाषाओं में गाई जाती हैं। नव से आगे दस की संख्या यानी पुनः एक का आवर्तन प्रारंभ हो जाता है।

कश्मीरवासी हिन्दू इस शुभ दिन की प्रभातबेला में जागकर अन्न से पूर्ण थाली के

दर्शन करते हैं।

थाली भरना व दर्शन करना-

इसका अभिप्राय है-थाली में रखे चावल, घी, दही, अखरोट, नमक की डली, कुछ मुद्रायें, वय-औषधि, पंचांग, इष्टदेवी चित्र, नये पुष्प चावल आटे की रोटी, आदि से है। इस थाली के दर्शन प्रातः जागकर सर्वप्रथम करने का अर्थ नववर्ष की अच्छी शुरूआत से है। इन्हीं पदार्थों से हमारा जीवन बनता है। इन्हीं पर हमारा जीवन टिका है। इन सब पदार्थों को पाकर हम यह न भूलें कि यह सब वस्तुयें इसी भारतमाता की कृपा का फल है। हमारा नववर्ष मां की पावन-प्रतिमा के दर्शन से प्रारंभ होता है और वर्षभर पंचांग को देखकर सारे त्यौहार यज्ञोपवीत एवं विवाहादि शुभकर्म रचायें। मां जगदंबा से प्रार्थना करें कि हम सदा आध्यात्मिक एवं भौतिक संपदा के भागी हों ।

पावन धरती कश्मीर-भूमि

कश्मीर की धरती के प्राकट्य से आज तक हम इसकी भक्ति करते आये हैं। कश्यप ऋषि ने इस भूमि को मंत्र अभिषेक से पावन किया है। इसी लिये संध्यावन्दन के समय हम गाते हैं। **''कश्यपेनाभिमंत्रिता''** कश्यप ने तुम्हें मंत्राभिषेक किया है। पुनश्चः- **''मृत्तिके त्वा च गृह्णामि प्रजया च धनेन च''**, हम स्वयं तथा हमारी संतति शारीरिक श्रम से तथा धन व्यय करके तुझे प्राप्त करते हैं। तुम्हारे द्वारा हम पावन हो जाते हैं। मिट्टी पावन है तथा पापहारिणी है।

विचार नागयात्राः-

वर्ष प्रतिपदा से एक दिन पहले ही हमारे पूर्वज विचारनाग (श्रीनगर) नामक तीर्थ पर सम्मिलित होकर नवर्ष के लिये हिन्दू समाज या पंडित समाज के विषय में विचार करते थे। आज की परिभाषा में विचारनाग को Think Tank कह सकते हैं।

कुछ सुझावः-

(क) इस सारे क्रम को विधिवत् निभायेंः- इस नववर्ष के उषाकाल में जागकर

स्नान, नवपरिधान, ध्यान के उपरान्त अवश्य जगद-अंबा के द्वारों में उपस्थित होकर दर्शन, आराधना एवं परिक्रमा करें। कश्मीर में श्रीशारिकाधाम, जम्मू में बाहुदुर्ग एवं वैष्णवी माता मंदिर, दिल्ली में छतरपुर मंदिर, कलकता में कालीमां मंदिर तथा हिमाचल में माता के पावन धामों की यात्रा लाभकारी है। अपनी-अपनी बस्ती के देवी द्वारों में हम आराधना करें।

(ख) व्रत रखें, शाकाहारी भोजन करें।

(ग) श्रीपंचस्तवी, श्री भवानी सहस्रनाम, श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ करें, घर पर "ॐ **जय जगदीश"** रामचरित मानस का संपूर्ण पाठ करें।

(घ) जन्त्री पर देवी मां का चित्र छपा हो तो उसको थाली में रखकर प्रातःकाल दर्शन करना शुभफल-दायक है।

(ङ) चैत्र कृष्ण अमावस्या के दिन पंडित सभा बुलाकर अपने हित की बातें शान्ति से सोचें तथा श्रीभट्ट जी का दिन मनायें। कश्मीर के देवस्थानों की रक्षा एवं मरम्मत धन संग्रह करें। शारदा देश की मुक्ति के लिये जगत्जननी से प्रार्थना करें। हम इस भूमि से प्यार करें,भूमि पुत्र बनें, अपनी समृद्धि एवं सुरक्षा के लिये स्वयं विचारें। शक्तिसंचय करें। अपनी समस्याओं के समाधान का उपाय हम स्वयं ढूंडें।

(च) 'ज़ंगत्रय' त्रिपुरसुन्दरी - माता का दिन है। इस दिन महिला-सम्मेलन बुलाकर देवी जी की लीला कश्मीरी भाषा में गाएँ तथा माताएँ बहिनें तथा बेटियाँ प्राप्त करें। यह सभायें अपने-अपने मुहल्लों में महिलाओं के द्वारा किसी एक निवास पर भी बुलाना ठीक है। यही "बादामवारी की सैर" का क्रम सिद्ध होगा।

(छ) श्री रामनवमी को "**श्रीरामचरित मानस**" का पाठ पूरा करें।

आज हम समय के उतार चढ़ाव से नवरेह की महिमा भूल जैसे गये हैं। इसके लिये किसी को दोष देने की आवश्यकता नहीं। क्या हम इस बात से अपरिचित है कि विदेशी

आक्रान्ताओं ने हमारी इस कश्यपमूमि पर जो विनाशलीला रचाई क्या वह अन्यत्र कहीं दिखलाई देती है? यह आँधी अभी थमी नहीं है। इस एक हजार वर्ष की सुदीर्घ विनाशलीला के कारण आज कश्मीर हिन्दुजन तथा हिन्दु संस्कृति से हीन, संस्कृत भाषा से हीन, ज्ञान विज्ञान के केन्द्रों से हीन, शस्त्र तथा शास्त्र शिक्षा से हीन हो गया है। महीनों तक ज्ञान विज्ञान के केन्द्र भस्म होते रहे गुरूजनों एवं आचार्यों की जीवनलीला समाप्त की गई। जो कुछ शेष रहा था तो उसे मंडलसरोवर में बहाकर उन्होंने आत्मसंतोषी, दानवी एवं यावनी, आपावनी लीला पूरी कर दी किन्तु आज का दिन नवरचना का दिन है। हम अपने बुद्धिकोश से उस सबको पुर्नजीवित करें जो सुरचना हमारे पूर्वजों ने मानव हितार्थ, जगत्हितार्थ हमें सौंपी थी।

विनाश नहीं विकास चाहिये। विध्वंस नहीं विलास चाहिए। हम ऋषियों की थाती वेद के आधार पर पुनः सत्य को खोजें। यही इस दिन की उज्जवल कामना है।

वार्षिक पंचांगः-

नववर्ष के प्रथम दिवस पर विश्वभर के हिन्दूओं एवं सभी भारतीय संप्रदायों के पंचांग' प्रारंभ होते है। पंचांग गणना का आधार चन्द्रगति से है जो वेदों के अनुसार निश्चित है। आज की तिथि याद रखें:- **जम्बुद्वीपे आर्यावर्त तावी नदी तटे ब्राह्मणों द्वितीये परार्धे अष्टाविंशतितमे कलियुगे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे कलौ बुद्धावतारे अत्र अद्य चैत्र मासस्य शुकल पक्षस्य तिथौ प्रति पदि परतः द्वितीयस्यां बुद्ध ावासिरे नैवेद्यं समर्पयापि नमो नमः।**

पंचांग की अन्य बातें-

पन्द्रह तिथियों का एक पक्ष होता है। प्रत्येक मास में दो पक्ष (१) शुक्लपक्ष (२) कृष्णपक्ष। २७ नक्षत्र ७ वार तथा वर्ष के बारह महीने, इसके अतिरिक्त सभी सूर्यसक्रान्तियां तथा तीज त्यौहार इसमें दर्ज होते है।

कश्मीरी पंचांग में विक्रमी संवत् का उल्लेख अवश्य रहता है क्योंकि कश्मीर-भूमि इस महामहिमाशाली चक्रवर्ती सम्राट के साम्राज्य का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। इसी

महाराजा ने वैदिक ज्योतिष को अपने शासनकाल में समृद्ध किया था। संपूर्ण विश्व की कालगणना का केन्द्रबिन्दु तब उज्जैन रहा है, जहां इसी कारण महाकालेश्वर भगवान् का प्रसिद्ध मंदिर अब भी सुशोभित है। यही उज्जैन उनकी राजधानी रही है हम अवश्व अपने पुत्रों तथा विवाहित पुत्रियों विशेषकर विदेशस्थ एवं दूरस्थों को पंचांग सप्रेम भेंट करें। धर्मविस्तार के उत्तरदायी एजेंट हम स्वयं बनें।

नववर्ष का अभिनन्दन:-

नववर्ष का अभिनन्दन केसरी धर्मध्वजा को अपने-अपने भवनों पर लहरा कर करें तथा निजी गृहद्वारों के सामने योग या आल्पनाओं के मनमोहकरूपों को खींचकर करें। कश्मीरी पंडित इस दिन नवीन वस्त्रों को पहनते हैं, यह नववर्ष की नवीनता का अंग माना जाता है। इस शुभ अवसर पर बधाई कार्ड स्वजनों को भेजों मधुरवाणी से आर्शीवाद प्रदान करें बधाई पट्ट बाजारों, चौराहों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों पर सुन्दरता के साथ प्रदर्शित करें। अभिनन्दन-संबन्धी विज्ञापन दैनिक पत्रों तथा साप्ताहिक पत्रों में छपवायें। पंचांग कर्ता बधाई-संदेश पंचांगों के प्रारंभ अवश्य प्रकाशित करें।

सब महानुभावों माताओं एवं नई पीढ़ी को बधाई स्वीकार हो !

निवेदक -

२० मार्च १९९६ पं० मोती लाल 'पुष्कर'

---

(१) पंचांग दिवाकर - वर्ष १९९६।

(२) संस्कार सरोवर - उपंग - अंक वीरभवन, रघुनाथपुरा, जम्मू।

(३) विश्व हिन्दू परिषद् स्मारिका - १९७९

(४) The Indian Express नई दिल्ली तिथि - ११.५.९५ पृष्ठ स्तम्भ - ४
शीर्षक Letters to the Editor

(५) अथर्ववेद - १२.१.६

(६) सौन्दर्य लहरी - श्लोक -२